इतिहास का सम्मोहन

● जवाहरलाल नेहरू

यदि हमें अतीत को समझना है तो सहानुभूति और समझदारी से देखना होगा. बहुत पहले हुए किसी व्यक्ति को समझने के लिए उन स्थितियों को समझना होगा, जिनमें उसे रहना पड़ा था, उन विचारों को समझना होगा, जो उसके मन में उठते थे. उन्हें आज की स्थितियों में रख कर देखना मूर्खता होगी. आज कोई भी गुलामी का समर्थन नहीं करेगा, पर महान प्लेटो गुलामी को ज़रूरी मानता था. हम आज के मूल्यों से अतीत को नहीं नाप सकते. इसी तरह अतीत के मूल्यों से आज को नापना भी गलत है.

अतीत के पास बहुत कुछ है हमें देने के लिए. सच तो यह है कि संस्कृति, सभ्यता, विज्ञान, ज्ञान आदि सब कुछ सुदूर या निकट अतीत की देन है हमें. अतीत के प्रति आभार व्यक्त करना सही है, पर भविष्य के प्रति भी हमारा कुछ कर्त्तव्य है, और शायद यह अतीत के प्रति आभार से कहीं ज़्यादा महत्त्वपूर्ण है. अतीत बीत चुका. हम उसे बदल नहीं सकते. पर भविष्य अभी आना है, शायद उसे गढ़ने में हमारा कुछ योगदान हो सकता है. यदि अतीत ने हमें सत्य के कुछ अंश दिये हैं तो भविष्य के गर्भ में भी सत्य के कई पक्ष छिपे हैं. भविष्य हमारा आह्वान कर रहा है उनकी खोज के लिए. लेकिन अक्सर अतीत भविष्य से ईर्ष्या करता है, और हमें जकड़े रखता है. भविष्य की ओर बढ़ने के लिए हमें अतीत से संघर्ष करना पड़ता है.

कहते हैं, इतिहास के पास बहुत कुछ है हमें सिखाने के लिए और यह भी कहते हैं कि इतिहास कभी स्वयं को दुहराता नहीं. दोनों बातें सही हैं, पर हम इतिहास की नकल करके कुछ नहीं सीख सकते. हां, इतिहास को प्रभावित करने वाली ताकतों का पता लगाकर हम अवश्य कुछ सीख सकते हैं. फिर भी जो हम पायेंगे वह शायद ही कोई सीधा उत्तर होगा. कार्ल मार्क्स का कहना है, 'इतिहास के पास पुराने सवालों का उत्तर देने के लिए नये सवाल खड़े करने के अलावा और कोई रास्ता नहीं है.'

पुराने दिन विश्वास के दिन थे– अंधी आस्था के दिन. वास्तुकारों और सामान्य

लोगों की आस्था के बिना अद्‌भुत मंदिर या मस्जिद या गिरजाघर नहीं बन सकते थे. इनका हर पत्थर और इनमें उकेरी गयी हर आकृति इस आस्था और विश्वास की कहानी कहती है. आज वह विश्वास हम में नहीं है, फिर भी ये मंदिर-मस्जिद हमें रोमांचित करते हैं. आज भी उपासना-स्थल बन रहे हैं, पर उनमें वह भावना नहीं है, जो मध्य युग में थी. हमारे समय को परिभाषित करने वाले व्यावसायिक दफ्तरों और आज के उपासना-गृहों में शायद ही कोई अंतर है.

हमारा समय अलग है. यह मोह भंग का युग है, संशय, अनिश्चय और सवाल उठाने का युग है. बहुत से प्राचीन विचारों और परम्पराओं को हम स्वीकार नहीं कर सकते. उनमें हमारा विश्वास नहीं है. इसलिए हम नये रास्ते खोजते हैं; सचाई के वे पक्ष तलाशते हैं जो हमारे वातावरण के अनुकूल हैं. हम एक-दूसरे से सवाल करते हैं, बहस करते हैं और नये-नये वादों और दर्शनों को विकसित करते हैं?

कभी-कभी विश्व का अन्याय, अप्रसन्नता और नृशंसता हम पर हावी हो जाती है और हमारे दिमागों में अंधेरा कर देती है, हमें कोई रास्ता नहीं सूझता. मैथ्यू अर्नाल्ड की तरह हमें लगता है कि दुनिया में आशा नहीं बची, और हमारे पास एक दूसरे के प्रति ईमानदार होने के अलावा और कोई चारा नहीं है.

यह दुनिया जो हमारे सामने है
सपनों की दुनिया है
इतने सारे रंग, इतनी सुंदरता, इतना नयापन
पर सच तो यह है
इसमें न आनंद है, न प्यार, न प्रकाश,
न निश्चतता, न शांति,
न घावों के लिए कोई मरहम,
और हम उन अंधेरे मैदानों में खड़े हैं
जहां अज्ञानी सेनाएं रात में लड़ रही हैं!

ऐसा निराशाजनक दृष्टिकोण अपनाने के बावजूद हमने जीवन या इतिहास से सही पाठ नहीं सीखा. इतिहास हमें विकास और प्रगति की शिक्षा देता है, मनुष्य के विकास की सम्भावनाओं से परिचित कराता है. जीवन वैविध्य और सम्पन्नता से भरा हुआ है. इसमें भले ही दलदल हों, धसाऊ ज़मीन हो, पर इसमें विशाल सागर भी हैं, पहाड़ है, बर्फ है, ग्लेशियर हैं और तारों भरी रातें हैं. इसमें परिवार और मित्रों का परिवार है, मजदूरों का भाईचारा है, संगीत है, किताबें हैं और है विचारों का साम्राज्य. इसलिए हम में से हर एक कह सकता है–

हे प्रभु, यद्यपि मैं धरती पर रहता हूं,
धरती की संतान हूं,
पर तारों भरे आकाश ने
सिरजा है मुझे.

ब्रह्मांड की सुंदरता की प्रशंसा करना और विचारों-कल्पनाओं के संसार में जीना

आसान है. पर इस तरह दूसरों के दुख से बच निकलना, उनकी चिंता न करना, साहस या अपनेपन की निशानी नहीं है. विचार क्रिया में बदलना ही चाहिए. रोम्या रोलां कहते हैं, 'क्रिया ही विचार का अंत है. वह हर विचार जो क्रिया तक नहीं पहुंचाता गर्भपात और विश्वासघात है. इसलिए, यदि हम विचारों के सेवक हैं, तो हमें कर्म का भी सेवक होना चाहिए.'

लोग अक्सर कुछ करने से इसलिए बचते हैं कि उन्हें परिणामों से डर लगता है– कुछ करने का मतलब ही खतरा उठाना है. दूर से देखें तो खतरा भयानक लगता है, पर नज़दीक जायें तो पता चलेगा कि ऐसा है नहीं. अक्सर यह खतरा भला साथी होता है, जीवन में जोश भरने वाला होता है. कई बार सामान्य जीवन-क्रम उबाऊ हो जाता है. हम मान लेते हैं कि ऐसा ही होगा, और उनमें कोई आनंद नहीं बचता. फिर भी जब हम कुछ समय जीवन की सामान्य चीज़ों के बिना जीते हैं तो हमें पता चलता है कि वे कितनी महत्व वाली हैं. कई लोग पहाड़ों की ऊंचाइयां नापने जाते हैं, पहाड़ चढ़ने के सुख के लिए खतरे उठाते हैं. फिर जब कठिनाइयों पर विजय पाने का सुख उन्हें मिलता है तो उनका दृष्टिकोण बेहतर हो जाता है, एक धागे से लटका जीने का सुख और गहरा हो जाता है.

नीचे अस्वास्थ्यकर कुहरे भरी घाटियों में जीने का विकल्प हम सबके पास है. लेकिन पहाड़ों की चोटियों को जीतने का सुख, स्वस्थ हवा में सांस लेने का अवसर हम सबको प्राप्य है. इसमें खतरों का साथ तो होता है, पर उगते सूरज का स्वागत करने का सुख भी है.

रवींद्रनाथ टैगोर की एक कविता के साथ मैं अपनी बात समाप्त करता हूं–

जहां अभय मन ललाट उन्नत
मुक्त ज्ञान का द्वार जहां,
खंड-खंड जग को न करे
संकीर्ण गृह-दीवार जहां,
जहां सत्य की गहराई से
शब्द-शब्द बाहर आये
जहां पूर्णता और साधना
अथक बांह निज फैलाये,
खो न चुकी हो जहां पंथ निज
स्वच्छ बुद्धि-धारा निर्मल,
मृत-परंपरा-शुष्क-मरुस्थल
रेत बीच अवरुद्ध विकल,
चिर विकासमय भाव-कर्म में
मन प्रवृत्त तू करे जहां
उस स्वतंत्रता-स्वर्ग में, पिता,
जागे मेरा देश वहां.

('ग्लिम्सिस आफ वर्ल्ड हिस्ट्री' से सम्पादित अंश)